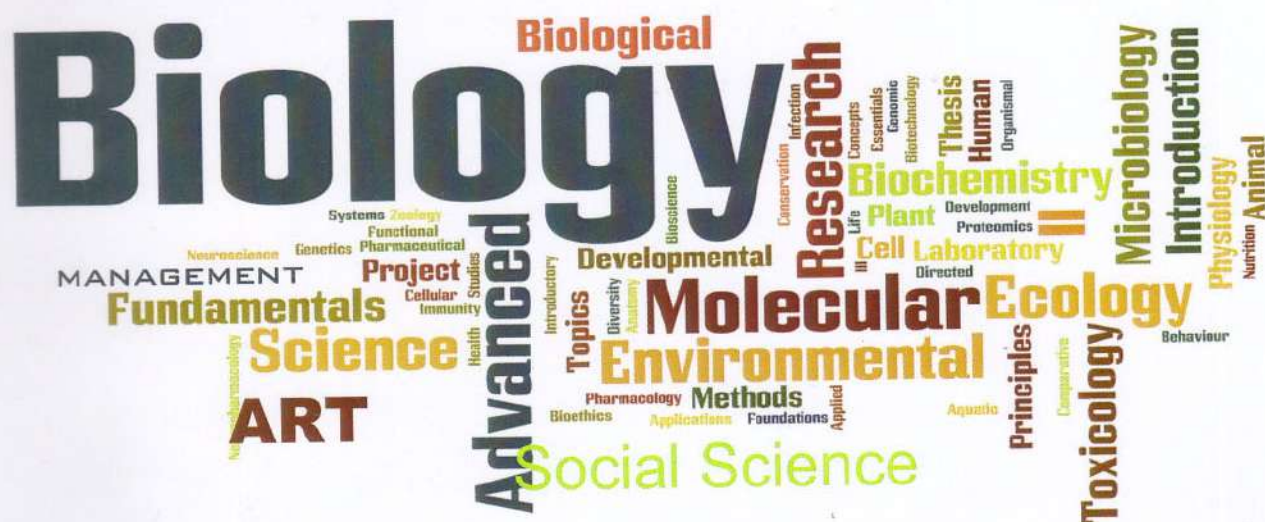




**Unnati International Journal of
Multidisciplinary Scientific Research**



**Peer Reviewed - Refereed Journal
Impact Factor - 3.2, Open Access,
Double Blind, Monthly Online Journal**



PRASHANT KUMAR

International Scientific Research Solution

Web : www.isrs.in

Email : ncrd2016@gmail.com

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	चतुर पंडित जी का भिन्न-भिन्न कलाकारों से सम्बंध स्थापित कर बंदिशों का संकलन करना	अंजली कनौजिया	1-3
2	मानव मूल्यों का ह्रास एक सामाजिक समस्या	डॉ. रविदास अहिरवार	4-8
3	शाजापुर जिले में महिला उद्यमिता विकार्षे शासकीय योजनाएँ एवं गैर सरकारी संगठनों का योगदान	डॉ. जगदीश प्रसाद कुल्मी	9-15
4	आवागमन के साधनों का विकास बैगा जनजातियों का प्रवास (मण्डला जिले के विशेष संदर्भ में)	डॉ. ज्योति सिंह	16-19
5	शैक्षिक वेब रेडियो : ज्ञान धारा, इग्नू के संदर्भ में	हृदेश श्रीवास्तव	20-23
6	भारत में चुनाव का महत्व	डॉ. जयश्री दीक्षित अभिजीत सिंह	24-25
7	बैंकों द्वारा अनुसूचित जनजाति वर्ग को रोजगार हेतु विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत प्रदत्त ऋण का प्रभाव : एक अध्ययन	ज्योति डावर	26-33
8	बैतूल जिले की चिचोली विकासखण्ड के बारे में सामान्य जानकारी	डॉ. सुधीर शर्मा कु. कल्पना बिसन्दे	34-37
9	सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं आदिवासी मंडला में जंगल सत्याग्रह	मनोज कुमार कुशवाहा	38-39

मानव मूल्यों का हास एक सामाजिक समस्या

डॉ. रविदास अहिरवार (गैस्ट फेलो)

समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (केन्द्रीय विवि.) मध्य प्रदेश

“भारतीय समाज मूल्यप्रधान समाज है” यह कहना गलत होगा। इस समय तो ऐसा हरगिज नहीं है। हम भारतीय यह दावा करते हैं कि हमारे भारत में सदा से नैतिकता रही है। अगर प्राचीन ग्रन्थों को गहराई से देखा जाये तो अनेक ऐसे उदाहरण मिलेंगे जिनमें नैतिकता को दरकिनार कर दिया गया। आज हम अपने यहां की पुस्तकों की व्याख्या इस प्रकार करते हैं कि समाज की तत्कालीन वास्तविकता दर्शाये। लेकिन हमें याद रखना चाहिये कि वे पुस्तकें समाज को उचित और अनुचित का उपदेश देती हैं न कि यह विवरण देती हैं कि समाज में क्या हो रहा है।

असंतोष, अलगाव, उपद्रव, आंदोलन, असमानता, असामंजस्य, अराजकता, आदर्श विहीनता, अन्याय, अत्याचार, अपमान, असफलता अवसाद, अस्थिरता, अनिश्चितता, संघर्ष, हिंसा,..... यही सब आज मनुष्य को घेरे हुए हैं। व्यक्ति में एवं समाज में साम्प्रदायिकता, जातीयता, भाषावाद, क्षेत्रीयतावाद, हिंसा की संकीर्ण कुत्सित भावनाओं व समस्याओं के मूल उत्तरदायी कारण हैं मनुष्य का नैतिक और चारित्रिक पतन अर्थात् नैतिक मूल्यों का क्षय एवं अवमूल्यन है। इस शोध पत्र के माध्यम से मैं उन मानव मूल्यों को उजागर करना चाहता हूँ जो सिर्फ मानव ने अपने स्वार्थ पूरा करने के लिये मानवता को दरकिनार कर दिया है।

यदि अवांछित बच्चों के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखा जाये तो हम पाते हैं कि महान पद्मकमी, सूर्य पुत्र कर्ण कुन्ती के अवांछित पुत्र थे जिन्हें तिरस्कृत कर दिया गया था उनके तिरस्कृत होने की वजह मात्र इतनी थी कि कुन्ती अविवाहित थी और समकालीन सामाजिक व्यवस्था में अविवाहित स्त्री को सन्तान को जन्म देने की अनुमति नहीं थी यहा तक कि अवांछित सन्तान को शिक्षा, सामाजिक सम्मान, से भी दूर रखा जाता था, और उसे एक सामाजिक कुरीति या घृणा की दृष्टि से देखा जाता था जो सूर्य पुत्र कर्ण के साथ हुआ। जबकि कर्ण उसी समकालीन समाज में एक सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर अर्जुन से किसी भी क्षेत्र में कमजोर नहीं था, फिर भी वह इस कलंक से आजीवन जूझता रहा अपमानित होता रहा, क्योंकि वह सिर्फ कुन्ती की अनचाही सन्तान थी और उसे एक शूद्र ने पाला था यह

कहानी सिर्फ कर्ण और कुन्ती पर खत्म नहीं होती

तब से लेकर आज तक ना जाने कितने कर्ण और कितनी कुन्तियां इस कलंक से कलंकित हैं आखिर हम इन परम्पराओं को कब तक ढोते रहेंगे ? हमारा भारतीय समाज इस कुरीति से अभी उभर नहीं पाया है जहाँ हम एक भारतीय समाज, संस्कृति, की दुहाई (प्रशंसा) कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर आये दिन सड़कों पर फेंके जा रहे नवजात शिशुओं की ओर किसी का ध्यान क्यों नहीं जाता ? हमारे समाज में एक नवजात शिशु को कितनी आसानी से सड़कों पर फेंक देते हैं या उनकी गर्भ में ही हत्या कर देते हैं सिर्फ समाज की नजरों में अपना सम्मान पाने के लिये, हमने यह कभी नहीं सोचा कि जिसकी हम हत्या कर रहे हैं, या सड़क पर फेंक रहे हैं वह भी एक समाज का हिस्सा है और सम्मान पाने का हकदार है, वह भी कभी अपना, परिवार, समाज, देश का नाम रोशन कर सकता है, मैं जानना चाहता हूँ कि इसमें उस नवजात शिशु का कहां दोष है

आदर्श प्रारूप – भारतीय समाज में स्त्री के लिए एक आदर्श प्रारूप निर्धारित है प्रत्येक पुरुष पत्नि के रूप में उसी आदर्श को प्राप्त करना चाहता है।

मैक्स बेबर— जिन्होंने आदर्श प्रारूप की अवधारणा दी उनका भी मानना था किसी भी आदर्श प्रारूप की सभी विशेषताओं का वास्तविकता से पूरा होना असम्भव है लेकिन भारतीय समाज आज भी पत्नि के रूप में या एक स्त्री को उसी दृष्टि से देखना चाहता है।

कार्ल मार्क्स दृष्टिकोण— यह माना गया कि जब तक पुरुष को यह ज्ञात नहीं था कि बच्चे पैदा होने में उसकी भी भूमिका है तब तक वह परिवार या बच्चों का कोई भी दायित्व या कोई भी अधिकार अपने उपर लेने के को तैयार नहीं था। जिस क्षण उसे यह पता चला कि संतान उत्पत्ति में उसका महत्वपूर्ण योगदान है तब से लेकर आज तक वह संतान पर अपना हिस्सा अधिकार बनाये हुए है, ऐसा क्यों ?

भारतीय समाज में समाजीकरण के दो रूप देखने को मिलते हैं एक लड़कों के लिए और एक

लड़कियों के लिए जहाँ पर लड़कियों की बात आती है तो परिवार, समाज, के मन में कई सवाल पैदा होने लगते हैं, कि लड़की पराया धन है जबकि उसको अभी कोई मालूम नहीं है कि वह क्या है ? और जैसे वह युवा होती है तो इस बात को समझने लगती है कि उसे अपना कौमार्य अपने पति के लिये सुरक्षित रखना है, और यदि वह अपना कौमार्य सुरक्षित नहीं रख पाती तो उसे हर तरफ से कलंकित किया जाता है और उसका भविष्य अंधकारमय हो जाता है जिसकी चर्चा हम आगे करेंगे ?

दुर्खीम की सामूहिक चेतना को एडरनों ने सामाजिक आतंकवाद कहा है क्योंकि इसी सामाजिक आतंकवाद एवं डर के कारण वह अपने विवाह पूर्व यौन कृत्यों को छुपाना चाहती है और यौन कृत्यों के परिणाम स्वरूप उत्पन्न सन्तान को छुपाने या फेंकने पर विवश होती है। दुर्खीम कहते हैं कि समाज कोई हो लेकिन उसमें जो सामाजिक चेतना है उसके अपने जो प्रतिमान है उसका अनुसरण करना समाज का एक दायित्व है विशेषकर स्त्रियों के लिये, वही दूसरी ओर दुर्खीम के सामूहिक चेतना की ओर इशारा करते हुए एडरनों का कहना है कि हमारे समाज में जो सामाजिक आतंकवाद के रूप में जो सामूहिक चेतना है उसका डर समाज में इस तरह व्याप्त है कि व्यक्ति जीवन भर उससे बचने का प्रयास करता रहता है ।

निजी सम्पत्ति के रूप में स्त्री- समकालीन व्यवस्था से लेकर आज तक हम स्त्री को पराया धन समझते आये हैं, ऐसा माना जाता है कि स्त्री एक घर परिवार, समाज की इज्जत है जो पहले पिता की होती है और युवा अवस्था आते ही उसको पति या वर के रूप में हस्तान्तरित कर दिया जाता है, एक स्त्री जो जन्म से ही उसके मन में यह भर दिया जाता है कि वह पराया धन है उसको अपने पति की सेवा करना है अपने साँस ससुर के घर जाना है जबकि वह यह भी जानती कि उसका पति कहाँ है कैसा है इसी वजह से स्त्री अपने आप को असुरक्षित महसूस करती है क्योंकि उसकी सुरक्षा पहले पिता के हाथ में और विवाह के बाद अपने पति के हाथ में होती है, औरत कभी नहीं चाहती कि वह अपनी सन्तान को फेंके, या उसकी हत्या करे लेकिन, अगर विवाह से पूर्व वह यौन सम्बन्ध बनाती है या उसके यहाँ कोई सन्तान होती है और वह उस सन्तान का तिरस्कृत नहीं करती तो उसका पिता उसे त्याग देगा और होने वाला पति भी स्वीकार नहीं

करेगा।

हरबर्ट ब्लूमर से जुड़ी प्रतीकात्मक अन्तः कियावाद - सन् 1969 में प्रकाशित पुस्तक **सिम्बोलिक एन्टरएक्सनिज्म : पर्सपेक्टिव एण्ड मैथड**, जिसमें बताया गया है कि व्यक्ति अपने जन्म से जो सीखता है उसने सिम्बोलिक रूप अधिक महत्वपूर्ण है, यहीं सिम्बोलिक व्यक्ति के मन में समाज समुदाय के प्रति आ जाते हैं जिससे वह उसी तरीके से एक दूसरे को देखना चाहते हैं, चाहे वह अवैद्य सन्तान की बात हो या फिर व्यक्ति/परिवार/समाज की हो। उसके मन में वहीं सिम्बोल बने रहते हैं, जो शुरू से देखता है परिवार में सिखाया जाता है, आज हमें सिम्बोल को छोड़कर एक नवजात शिशु की जिन्दगी के बारे में सोचना होगा ।

प्यार और परवरिश- यहाँ प्यार और परवरिश दोनों शब्द अलग-अलग हैं जहाँ व्यक्ति प्यार करने में कोई कसर नहीं छोड़ता वहीं परवरिश करने से डरता है ऐसा क्यों ?

सिर्फ इसलिए कि प्यार उसकी जरूरत है और परवरिश उसकी बदनामी ? कई घटनाएँ ऐसी आपको देखने को मिल जायेगी जिससे आप प्यार और परवरिश को समझ पायेगे जैसे- विवाह के पूर्व एक स्त्री को कई प्रकार से लुभाया जाता है वादे कसमों में कोई कमी नहीं होती तरह-तरह से लुभाया जाता है और प्यार हो जाने पर शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिये व्यक्ति मजबूर कर देता है और वही स्त्री जब एक गर्भ धारण कर लेती है तो उसके मन में हजारों सवाल उठने लगते हैं, घर, परिवार, समाज के प्रति, और अपनी बदनामी से बचने के लिये उससे दूर भागने लगता है फिर वह सब भूल जाता है और सिर्फ अपनी इज्जत को बचाने की सोचने लगता है, ऐसी स्थिति में वही पुरुष उस स्त्री को या तो जान से मार डालता है या गर्व को मारने की कोशिश करता है, या बच्चे को फेंकने के लिये और आत्महत्या जैसा कदम उठाने के लिये मजबूर करता है।

ये कैसा प्यार है जिसकी हम परवरिश नहीं कर सकते, जिसकी हम हत्या करवाते हैं जिसको हम छुपाते हैं जिसे हम सड़को पर फेंक जाते हैं सिर्फ इसलिए कि समाज, परिवार में उसकी बदनामी होगी ?

पूँजीवाद और गरीबी - अनचाही सन्तान को सड़को पर फेंकना और उनकी हत्या में पूँजीवाद और गरीबी दोनों जिम्मेदार हैं पूँजीवाद इसलिए कि वह हर प्रकार से सक्षम है जिसकी वजह से वह समाज में

बदनामी के डर से आसानी से गर्भपात या वच्चे को तिरस्कृत कर देता है और समाज की नजरों में अपनी छवी बनाये रखता है। वही उसके विपरीत गरीबी जो एक अनचाही सन्तान को जन्म देने पर मजबूर हो जाती है क्योंकि उसके पास ना तो धन है और न ही समाज में उसका उतना सम्मान जिससे कि गर्भपात करा सके इसलिए वह समाज के डर से और उसका पालन पोषण न कर पाने की वजह से मजबूरी में उसको यह कदम उठाने पड़ते हैं क्योंकि उसके कोई विकल्प नहीं है न तो उसके पास पूँजी है लगाने को और न ही उसे खिलाने के लिये खाना। इस स्थिति में वह क्या करे या तो उस गर्भ की हत्या करे या होने वाली सन्तान को त्यागे या फिर वह स्वयं आत्म हत्या कर ले।

अनाथाश्रम- हमारे हिन्दुस्तान में न जाने ऐसे कितने अनाथाश्रम संचालित हैं जिनमें उन बच्चों को पाला जाता है जो अपने माता-पिता के प्यार से वंचित हैं भारतीय समाज व्यवस्था के अनुरूप अनाथ शब्द एक स्थिति तक ठीक है क्योंकि अनाथ होने के कई कारण हो सकते हैं, परन्तु जहाँ अवैध सन्तान की बात आती है तो व्यक्ति के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो कि व्यक्ति समाज एक हीन भावना की दृष्टि से देखता है क्योंकि उसके पास ऐसा कोई प्रमाण नहीं है इस समाज के लिये जो यह कह सके कि हमारे माता-पिता का नाम ये है, और अनाथ का अर्थ ही होता है कि उसका इस समाजिक व्यवस्था की दृष्टि से कोई सम्मान नहीं है उसका पालन पोषण करने वाला भी कोई नहीं है अर्थात् उसके माता-पिता या तो अज्ञात होते हैं या फिर उनकी मृत्यु हो चुकी होती है मृत्यु होने तक तो ठीक है परन्तु ऐसे कैसे हो सकता है जिसे हम अवैध सन्तान कहते हैं वह माता जिसने अपने गर्भ में नौ माह खून से सींचने के बाद उसे सड़क या अनाथाश्रम के हवाले करके उसको भूल जाये, और फिर यह कहा जाये कि इनके कोई माता-पिता नहीं हैं क्योंकि जो जीव जन्म लेता है उसका कोई न कोई माता-पिता तो होगा समाज की दृष्टि में चाहे वह बैद्य हो या अवैद्य यह सब सामाजिक दबाव के कारण होता है

फिर भी हमारे हिन्दुस्तान भारतीय समाज में ऐसे कितने लोग (परिवार) हैं जिनके पास सन्तान नहीं है और वह सन्तान पाने के लिये इकछुक नहीं है, और सन्तान पाने के लिए वह क्या नहीं करते ? शायद ही ऐसे लोग (परिवार) होंगे जो उगलियों पर गिने जा सकते हैं, जिन्होंने इन बच्चों को पाला हो अगर यही सन्तान वे परिवार जिनके पास सन्तान नहीं है अपनी

सन्तान की तरह रख ले और उसका पालन पोषण करे तो हम यहाँ समाज के दोहरे कलंक से बच सकते हैं एक तो वह जिसके पास सन्तान नहीं है और एक वह जिसके पास अपने माता-पिता की पहचान नहीं है। फिर मुझे नहीं लगता कि इन अनाथाश्रमों की आवश्यकता होगी लेकिन हमारी भारतीय समाज को यह सब मंजूर क्यों नहीं है ?

सिग्मण्ड फ्राइड कहता है कि व्यक्ति के अंदर इड, इगो, और सुपर इगो होता है। जिसका एक रूप व्यक्ति के सेक्स सम्बन्ध से लेकर गर्भधारण, और नवजात शिशु को फेंकने में मिलता है, जब व्यक्ति सेक्स करता है तो आने वाले परिणाम के बारे में नहीं सोचता परन्तु जैसे ही एक स्त्री जब गर्भधारण कर लेती है तो उसके अंदर इगो, और सुपर इगो कार्य करने लगते हैं, और इसी वजह से समाज की नजरों में अपनी छवि बनाये रखने के लिए वह एक मासूम को त्याग देता है।

समाज की सोच सीमित- साम्यवाद से लेकर आधुनिक समाज की सोच एक सीमित दायरे में सिमट कर रह गई है जो एक भारतीय समाज पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करती है ? जहाँ एक ओर समाज में अनचाहे गर्भ को धारण करने वाली स्त्री और सन्तान दोनों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं एवं समाज के सामने उससे अच्छा व्यवहार नहीं करते वहीं दूसरी ओर उसी समाज के लोग उस स्त्री को दूसरे तरीकें से समाज की नजरों से बचते हुए अपनी संतुष्टि के लिए दवाव बनाते हैं और वह स्त्री न चाहते हुए भी इन कार्यों को मजबूर होती है क्योंकि उसे समाज में रहना है। जरा सोचिए जो नाजायज फायदा हम एक वेबश औरत का उठा रहें हैं उसी जगह अगर हमारी माँ, बहिन या पत्नि होती तो हम क्या करते ?

आज के समाज की सोच को देखिये जहाँ एक तरफ समाज के एक व्यक्ति का एक्सिडेंट या गौहत्या हो जाता है चाहे हम उसे जानते हो या नहीं परन्तु वहाँ भीड़ जमा हो जाती है और बड़े-बड़े दंगे होने लगते हैं यहाँ तक की उस वाहन को जला दिया जाता है और दोषी व्यक्ति को पीटा जाता है पुलिस के हवाले किया जाता है और कानूनी कार्यवाही की जाती है। वही दूसरी ओर अगर किसी गांव के पास या पहाड़ में रेल्वे स्टेशन पर एक नवजात शिशु (जीवित/मृत) मिलने पर हम क्या करते हैं ? कुछ नहीं क्यों ? यहाँ तक कि बगैर प्रशासन के उसे वहाँ से उठाया भी नहीं जाता और समाज न ही समाज द्वारा यह जानने की कोशिश की जाती है कि यह नवजात शिशु किसका है।

सिर्फ इसलिये कि समाज की बदनामी होगी ?

पवित्रता:- हमारे भारतीय समाज में पवित्रता को लेकर बहुत सवाल होते हैं जो आपको रामायण में सीता के प्रति पवित्रता को लेकर लगाये गए प्रश्न चिन्ह इस बात का प्रमाण है। हमारे समाज में पवित्रता का सम्बन्ध क्या सिर्फ स्त्रियों से है ? ऐसा क्यों ? क्या कभी हमने सोचा है कि जिस पवित्रता की बात हम कर रहे हैं उस पवित्रता से हम कितने पवित्र हैं या फिर कोसों दूर है। हमारे मन में ऐसे सवाल क्यों उठते हैं। आखिर स्त्री से ही पवित्रता की आशा क्यों रखते हैं हम पवित्र क्यों नहीं बनना चाहते ?

आनुनिक तकनीक - इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारा देश तकनीक क्षेत्र में बहुत आगे है, और निरन्तर बढ़ता जा रहा है। लेकिन विकसित राज्य गुजरात, महाराष्ट्र, जैसे राज्यों में लिंग अनुपात कम क्यों है आधुनिक तकनीक का जितना योगदान व्यक्ति / समाज के विकास में है उतना ही इन नवजात शिशुओं के तिरस्कृत करने में भी जिम्मेदार है, इस तकनीक के माध्यम से व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुरूप ही कार्य करना चाहता है यहाँ तक कि वह बच्चा भी अपनी इच्छा के अनुरूप चाहता है यह उस पर निर्भर करता है कि उसे लड़का चाहिए या लड़की, शासन द्वारा इस पर रोक लगाने के बावजूद भी इसका उपयोग आसानी से किया जा रहा है बस इसका नाम और स्वरूप बदल गया है।

लैब परीक्षण- जब कोई व्यक्ति गर्भ परीक्षण कराने जाता है तो उसको यह नहीं बताया जाता कि उसके गर्भ में लड़का है या लड़की यह एक अच्छी बात है क्योंकि सरकार ने इस पर रोक लगा रखी है और दोषी पाये जाने पर सजा, और जुर्माना दोनों का प्रावधान है। परन्तु उसी जगह लैब परीक्षण के बाद भगवान को सम्बोधित करते हुए कहा जाता है कि, हाय, कृष्ण ने क्या वन्शी बजाई थी, लक्ष्मी की कृपा है, सीता दवे पॉव जा रही थी आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है जिससे व्यक्ति आसानी से समझ जाता है कि गर्भ में लड़का है या लड़की, और सचेत हो जाता है

डॉ. मीनाक्षी जे0पी0जे अस्पताल भोपाल- इनका मानना है कि पिछले 10 वर्षों में इलाज के लिये आई 100 महिलाओं में से 4 महिलाएँ ऐसी होती थी जो विवाह पूर्व गर्भ धारण से सम्बन्धित थी, वही आज यह संख्या बढ़कर 100 महिलाओं में से 10 महिलाएँ ऐसी आती हैं।

प्रमुख ऑकड़े जो दैनिक समाचार पत्रों में

प्रकाशित होते रहें हैं-

19/08/2013 दमोह अस्पताल में शिशु को जन्म देने के बाद लावारिश छोड़ा

24/08/2013 छतरपुर में झाड़ियों के पीछे छोड़ा शिशु को

13/07/2013 दतिया रेल्वे स्टेशन पर छोड़ा शिशु को

07/09/2012 देवरी भगवान के मंदिर में छोड़ी एक कन्या

सरकारी योजनाएँ- हमारे भारत देश या राज्य में ऐसी कितनी योजनाएँ हैं जो सिर्फ बच्चों के लिये विशेष रूप से लड़कियों के लिए ही चलाई जा रही हैं जैसे- लाइली लक्ष्मी योजना, धन लक्ष्मी योजना, गाँव की बेटी योजना, आगनबाड़ी केन्द्र, अनेक योजनाओं का संचालन सरकार द्वारा बच्चों को ध्यान में रखकर चलाई जा रही है, लेकिन इन योजनाओं का लाभ किसको मिलता है सिर्फ जिनके माता-पिता हैं या जिनके पीछे माता-पिता का नाम है विशेष कर पिता का नाम होना तो आवश्यक है, परन्तु जिन बच्चों को तिरस्कृत किया जाता है उनके बारे में कभी सरकार ने सोचा है उनके लिये क्या सिर्फ अनाथाश्रम, या मौत, या समाज के धनी वर्ग, उद्योगपति जो चंदा के रूप में उस संस्था को थोड़ा बहुत पैसा या कपड़े दान के रूप में दे देते हैं, इन सबके लिये जिम्मेदार सरकार भी है। सरकार चाहे तो इन बच्चों को ले सकती है उसका पालन पोषण कर सकती है। मैं चाहता हूँ कि समाज को इस बारे में भी सोचना चाहियें।

प्रसव पीड़ा का ज्ञान - ऐसा माना जात है कि जब स्त्री गर्भधारण के बाद प्रसव पीड़ा से जूझती है तो उसका पुनर्जन्म होता है, और कई बार कई मातायें, बहिनें, इस पीड़ा से काल के गाल में समा जाती हैं, यह बात बिल्कुल सत्य है, परन्तु इतना कष्ट सहने के बाद कोई भी स्त्री अपनी सन्तान को सड़कों पर फेंक दे यह सोचने की बात है, कि आखिर ऐसा क्यों करती है, ऐसा नहीं कि वह अपनी सन्तान को अपना दूध नहीं पिला सकती ऐसा नहीं कि उसे वह पाल नहीं सकती, सिर्फ इसलिए कि समाज, समुदाय को जो पसंद है या समाज की जो रीति रिवाज है उसके अनुरूप ही उसको रहना पड़ेगा, ये हमारे भारतीय समाज की अवधारणा है। जो स्त्री को न चाहते हुए भी करना पड़ता है।

मैं जानना चाहता हूँ कि अगर यही गर्भधारण महिला की जगह पुरुष करते होते तो क्या नवजात

शिशु को इतनी निर्ममता से सड़कों पर फेंक देते उसकी हत्या कर देते, नहीं क्योंकि अभी पुरुष, समाज, समुदाय को स्त्री, की पीड़ा, दर्द, का अहसास नहीं है, जिस दिन पुरुष को स्त्री के दर्द का ज्ञान हो जायेगा, उस दिन हमारे समाज में स्त्रियों पर लगने वाले कलंक अपने आप समाप्त हो जायेगे । और नवजात शिशुओं को एक नई जिन्दगी मिलेगी समाज में रहने का मौका मिलेगा ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

- देसाई, ए.आर. 1961 रूरल सोशियोलॉजी इन इण्डिया, बम्बई पोपुलर प्रकाशन
- दुवे, एस.सी 1966 विकास का समाजशास्त्र वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- 1989 आवर पोस्ट ह्यूमन पयूचर, कॉन्सीक्वेन्स ऑफ बायोटेक्नॉलॉजी रिवोल्यूशन न्यूयार्क, दी फी प्रेस
- 1993, सोशल चेंज इन इण्डिया, काइसिस एण्ड रेंजिलियेन्स, न्यू देलही, हर आनन्द पब्लिकेश
- Ahuja, mukesh, widos, New Age publication Delhi 1996
- Ahuja, Ram crime against women, Rawat publication, 1987
- Becker Howard S., social problems : A modern Approach, John Wiley & sons , new York 1966